विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 16 जुलाई 2020

विषय षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्यारे बच्चों! कल मैं दो लकारों का पढ़ाई करवाया था। आज तीन लकारों की पढ़ाई करनी है ध्यान देकर समझें।

लोट् लकार (आज्ञा) के प्रत्यय

दूसरे, तीसरे, पाचवें में और नवें गण के धातुओं के बाद मध्यम पुरुष एकवचन में "ही" जोड़ा जाता है।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तु	ताम्	न्तु
म० पु०	हि(अ)	तम्	त
उ० पु०	नि	व	म

लङ् (भूतकाल) के प्रत्यय

लङ् (भूतकाल) में धातु के आदि में भी "अ" लगता है। इसलिए इसका रूप "अभवत्, अभवताम्' 'अभवन्' आदि होंगे।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त्	ताम्	न्
उ० पु०	:	तम्	त
म० पु०	म्	व	म

(विधिलिङ् के पत्यय)

विधिलिङ् में इस तरह बनता है – भव् + अ + ईत् + भवेत् ।

“अ” ओर को मिला कर “ए” गुण - सन्धि हो जाता है।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इत्	ईताम्	ईयुः
म० पु०	ईः	ईतम्	ईत
उ० पु०	ईयम्(एयम्)	ईव(एव)	ईम्(एम्)